स्वयं के घेरे
(कहानी संग्रह)
अलका प्रमोद

स्वयं के घेरे

(कहानी संग्रह)

अलका प्रमोद

विषय-सूची

1.	स्वयं के घेरे	1
2.	सोचा भी न था	11
3.	मम्मा यू आर ग्रेट	20
4.	आईना	29
5.	भोर की रश्मियां	36
6.	अब नहीं	43
7.	पर हित सरिस धरम नहीं भाई	51
8.	मन का साथ	57
9.	छह बाई चार	63
10.	एक पहिये की गाड़ी	68
11.	इस मोड़ पर	75
12.	हार	81
13.	किलकारी	89

समर्पण

वरिष्ठ रचनाधर्मी ममता कालिया जी को सादर समर्पित,
जिनकी रचनाओं ने मुझे सदा प्रभावित किया है।

कुछ कहना है

गति जीवन का आधार है। काल का प्रवाह निरन्तर चलायमान रहता है, जो अपनी धारा में नित्य पुराने को समेटता और नवीन को स्थापित करता चलता है। प्रवाह में कुछ पुष्प भी होते हैं तो कुछ काँटे भी। कोई भी समाज इस प्रवाह की धारा से अछूता नहीं रह सकता। हमारा समाज भी इसका अपवाद नहीं है। आज के आधुनिक तकनीकी प्रधान युग में हमारी मान्यताओं, प्राथमिकताओं, विचारों और सामाजिक ढांचे में तीव्रता से बदलाव आया है।

इस बदलाव की धारा में समाज में नारी की स्थिति में भी उल्लेखनीय बदलाव परिलक्षित होता है। नारी निरन्तर संघर्षरत होकर अपने आत्मसम्मान, न्याय और बराबरी के लक्ष्य की ओर अग्रसर है और पर्याप्त सीमा तक अपने प्रयास में सफल भी हो रही है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ नारी ने अपनी उपस्थिति दर्ज न की हो। आज वह पुरुष के कंधे से कंधा मिला कर अपनी मेधा, क्षमता, साहस और दृढ़ता का लोहा मनवा रही है तथा कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हार न मान कर अपने लक्ष्य के लिये प्रयासरत है। वह बात अलग है कि अभी उसे एक लम्बी राह तय करनी है।

परन्तु इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता कि समाज में संतुलन अवश्यम्भावी है। कहीं–कहीं नारी सशक्तिकरण और आधुनिकता की दौड़ में वह दिग्भ्रमित भी हो गयी है, उचित दिशा निर्धारण और सीमा तय न की गयी तो स्वयं अपना ही अहित होने का अंदेशा है। इस बात को उसे समझना होगा और अपने भावना और कर्म के संतुलन को बना कर राह तय करनी होगी।